युवा शक्ति को मिले दिशा,
सपनों को मिले उड़ान।

RNI : UAHIN/25/A3210

# आवाम इंडिया

हिन्दी साप्ताहिक

वर्ष: 01 अंक: 17 देहरादून, शुक्रवार 14 अगस्त 2026 मूल्य 2 रुपये पृष्ठ: 8 www.aawamindia.com

स्वतंत्रता दिवस विशेष

# जिंदा रहना चाहिए, आजादी का जज्बा

15 अगस्त केवल कैलेंडर की एक तारीख नहीं है। यह भारत की आत्मा का वह पर्व है, जब तिरंगा केवल आसमान में नहीं लहराता, बल्कि करोड़ों भारतीयों के हृदय में स्वाभिमान, त्याग, संघर्ष और उम्मीद की लहर पैदा करता है। यह वह दिन है जब हमें याद आता है कि आजादी हमें किसी उपहार के रूप में नहीं मिली थी। इसके पीछे अनगिनत बलिदानों की ऐसी लंबी कहानी है, जिसके कई नायक इतिहास की किताबों में दर्ज हैं और असंख्य ऐसे वीर हैं, जिनके नाम तक हम नहीं जानते।

आजादी की खुशी इसलिए विशेष है क्योंकि इसके पीछे गुलामी का लंबा अंध कार था। आजादी का जज्बा इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसे पाने के लिए देश के लोगों ने अपना सुख, अपना घर, अपना परिवार, अपना भविष्य और यहां तक कि अपना जीवन तक राष्ट्र के नाम कर दिया। वीरता की कहानियां इसलिए अमर हैं क्योंकि उन्होंने हमें सिखाया कि राष्ट्र केवल जमीन का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की साझा चेतना, संस्कृति, संघर्ष और सपनों का नाम है।

आज जब हम स्वतंत्र भारत की यात्रा को पीछे मुड़कर देखते हैं तो हमारे सामने कई प्रश्न खड़े होते हैंख्रहमने क्या खोया? हमने क्या पाया? आजादी के बाद हमने कितनी दूरी तय की? क्या हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों का भारत बन पाया? क्या अभी कुछ हासिल होना बाकी है? और सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नख्रहमारे ख्वाबों का भारत कैसा होना चाहिए?

**आजादी की वह सुबह**

15 अगस्त 1947 की सुबह भारत ने एक नए युग में प्रवेश किया। सदियों की पराधीनता, संघर्ष और राजनीतिक उथल-पुथल के बाद देश स्वतंत्र हुआ। दिल्ली में तिरंगा फहराया गया तो वह केवल एक ध्वज का आरोहण नहीं था; वह भारतीय आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना थी। लेकिन उस सुबह की खुशी पूरी तरह बेफिक्र नहीं थी। स्वतंत्रता के साथ विभाजन का दर्द भी आया। लाखों लोगों ने अपने घर छोड़े, परिवार बिछड़े और असंख्य लोगों ने हिंसा की त्रासदी झेली। स्वतंत्रता की खुशी और विभाजन का दुख एक ही समय में भारतीय इतिहास का हिस्सा बने।

हमें उन लाखों सामान्य भारतीयों को भी याद करना चाहिए जिन्होंने अपने स्तर पर इस संघर्ष को मजबूत किया। किसी ने जेल की यातना सही, किसी ने आंदोलन में भाग लिया, किसी ने आर्थिक सहायता दी, किसी ने संदेश पहुंचाया और किसी ने अपने परिवार के सदस्य को देश के लिए कुर्बान होते देखा।

इतिहास केवल बड़े नामों से नहीं बनता। इतिहास उन अनगिनत अनाम लोगों के त्याग से भी बनता है जिनकी वजह से आने वाली पीढ़ियां स्वतंत्र हवा में सांस ले सकीं।

**आजादी का असली अर्थ**

आजादी का अर्थ केवल विदेशी शासन से मुक्ति नहीं है।

आजादी का अर्थ है-अपने भविष्य को स्वयं तय करने की क्षमता।अपने विचार व्यक्त करने का अधिकार। सम्मान के साथ जीने का अवसर। कानून के सामने समानता।

हमें एक नागरिक के रूप में अधिकार मिले हैं तो उसके साथ कर्तव्य भी मिले हैं। जिस तिरंगे को हम सलाम करते हैं, उसकी गरिमा बनाए रखना भी हमारा दायित्व है। जिस संविधान ने हमें अधि कार दिए, उसके मूल्यों की रक्षा करना भी हमारी जिम्मेदारी है।

सच्ची आजादी तब होगी जब देश का नागरिक अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने के साथ-साथ अपने कर्तव्यों के प्रति भी ईमानदार होगा।

**वीरता के कई रूप होते हैं**

इसमे कोई दो राय नहीं है कि युद्धभूमि वीरता की पराकाष्ठा होती है। निश्चित रूप से हमारे सैनिकों की वीरता भारत की सबसे बड़ी शक्तियों में से एक है। सीमा पर खड़ा जवान जब बर्फ, रेगिस्तान, पहाड़ और कठिन परिस्थितियों के बीच राष्ट्र की रक्षा करता है तो पूरा देश उसके सामने नतमस्तक होता है। लेकिन वीरता के कई रूप हैं। किसान का कठिन परिस्थितियों में अन्न पैदा करना भी वीरता है। शिक्षक का एक बच्चे के भविष्य को संवारना भी वीरता है। डॉक्टर का कठिन समय में सेवा करना भी वीरता है। वैज्ञानिक का वर्षों तक प्रयोगशाला में मेहनत करना भी वीरता हैईमानदार कर्मचारी का भ्रष्टाचार से समझौता न करना भी वीरता है।

एक मां का सीमित संसाधनों में अपने बच्चों को बेहतर भविष्य देने का संघर्ष भी वीरता है। और जब कोई युवा अपने गांव से निकलकर शिक्षा, रोजगार और समाज की बेहतरी के लिए संघर्ष करता है, तो उसमें भी उसी वीरता की झलक दिखाई देती है। हमें वीर बनना होगा और अपनी वीरता का परिचय देना होगा। राष्ट्र निर्माण की वीरता बंदूक से नहीं, चरित्र से भी पैदा होती है।

**हमनें क्या खोया**

हमने विभाजन में लाखों परिवारों की शांति खोई है। हमने हिंसा में असंख्य जीवन खोए। हमने अपने इतिहास के अनेक हिस्सों को समय के साथ धुंधला होते देखा। ये कहने में भी कोई दो राय नहीं है कि इन गुजरे सालों में कई पारंपरिक ज्ञान प्रणालियां, लोक संस्कृतियां और भाषाई विविधताएं भी कमजोर हुई हैं।

अब चुनौती यह है कि इस बदलते दौर में हम संवेदनशीलता न खो दें। सड़कें चौड़ी होती जाएं लेकिन दिलों के बीच दूरी बढ़ती जाए, तो आजादी का सपना अधूरा है। अगर शहर चमकते रहें लेकिन गांव खाली होते जाएं, तो अभी सफर बाकी है। अगर तकनीक आगे बढ़े लेकिन मानवीय संबंध कमजोर होते जाएं, तो हमें अपनी प्राथमिकताओं पर विचार करना होगा। अगर शिक्षा की डिग्रियां बढ़ें लेकिन चरित्र, संवेदना और जिम्मेदारी कम हो जाए, तो हमें शिक्षा के उद्देश्य को फिर से समझना होगा। हमें समझना होगा कि भारत की असली ताकत केवल उसकी अर्थव्यवस्था नहीं, बल्कि उसकी सामाजिक और सांस्कृतिक आत्मा ही है।

**हमने क्या पाया?**

इन चुनौतियों के बावजूद स्वतंत्र भारत की उपलब्धियां असाधारण हैं। 1947 का भारत और आज का भारत एक जैसा नहीं है। हमने लोकतंत्र को मजबूती दी। संविधान को आधार बनाया। विज्ञान और तकनीक में बड़ी उपलब्धियां हासिल कीं। कृषि उत्पादन में आत्मनिर्भरता की दिशा में लंबी यात्रा तय की। अंतरिक्ष विज्ञान में अपनी पहचान बनाई। सूचना प्रौद्योगिकी ने भारत को वैश्विक मंच पर नई भूमिका दी।

भारत की युवा आबादी आज पूरी दुनिया का ध्यान आकर्षित करती है। भारतीय डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, उद्यमी, कलाकार, खिलाड़ी और पेशेवर दुनिया के अनेक देशों में अपनी प्रतिभा का परिचय दे रहे हैं।

हमने डिजिटल तकनीक को आम नागरिक तक पहुंचाने में उल्लेखनीय प्रगति की। गांवों और छोटे शहरों में भी नई संभावनाएं पैदा हुई हैं।

हमारे खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर तिरंगे का सम्मान बढ़ाया है। हमारे वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष में भारत की क्षमता का प्रदर्शन किया है। हमारे उद्यमियों ने नए उद्योग और रोजगार के अवसर पैदा किए हैं।

लेकिन सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इतने विशाल और विविध देश ने लोकतांत्रिक व्यवस्था को निरंतर आगे बढ़ाया है। भाषा अलग, खान-पान अलग, पहनावा अलग, पूजा-पद्धतियां अलग, भौगोलिक परिस्थितियां अलगख्रफिर भी भारत एक है। यही भारत की सबसे बड़ी शक्ति है। अब भारत का भविष्य उसकी युवा पीढ़ी के हाथों में है। स्टार्टअप हो या खेती, पत्रकारिता हो या विज्ञान, खेल हो या कलाख्रहर क्षेत्र में नई पीढ़ी भारत की तस्वीर बदल सकती है।

**पर्यावरण के बिना विकास अधूरा**

आज भारत जिस तेजी से विकास की ओर बढ़ रहा है, उसके साथ पर्यावरण संरक्षण को भी प्राथमिकता देनी होगी।

हिमालय केवल उत्तर भारत का भौगोलिक क्षेत्र नहीं है; वह देश की जलवायु, नदियों और पारिस्थितिकी के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। नदियां केवल जल का स्रोत नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की जीवनरेखा हैं। वन, पहाड़, समुद्र, नदियां और जैव विविध ता हमारी आने वाली पीढ़ियों की संपत्ति हैं।

अगर आज हम विकास के नाम पर प्रकृति को नष्ट कर देंगे तो आने वाली पीढ़ियां हमसे सवाल करेंगी। इसलिए ख्वाबों का भारत ऐसा होना चाहिए जहां विकास हो, लेकिन प्रकृति की कीमत पर नहीं। हर नागरिक यह समझे कि पर्यावरण संरक्षण सरकार का ही नहीं, समाज का भी दायित्व है।

इन गुजरे हुए सालों में हमने बहुत कुछ हासिल किया है। लेकिन बहुत कुछ बाकी भी है। स्वतंत्रता सेनानियों का भारत केवल शक्तिशाली भारत नहीं था। वह न्यायपूर्ण, आत्मनिर्भर, शिक्षित, समान और मानवीय भारत का सपना था। हमने आर्थिक और तकनीकी क्षेत्र में लंबी दूरी तय की है। लेकिन सामाजिक न्याय, समान अवसर, पर्यावरणीय संतुलन और नागरिक जिम्मेदारी की यात्रा अभी जारी है।

राष्ट्र निर्माण कोई एक दिन का काम नहीं है। हर पीढ़ी को अपनी भूमिका निभानी होती है। पहली पीढ़ी ने स्वतंत्रता हासिल की। अगली पीढ़ियों ने लोकतंत्र, संस्थाओं और विकास की नींव मजबूत की। अब हमारी पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि भारत को अधिक न्यायपूर्ण, समृद्ध, शिक्षित, सुरक्षित, संवेदनशील और आत्मनिर्भर बनाएं।

और यही संदेश है कि आजादी का जज्बा जिंदा रहना चाहिए।

# केयर इकॉनॉमी को सुदृढ़ बनाने पर पहली विशेष कार्यशाला आयोजित

देहरादून। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार एवं समाज कल्याण विभाग, उत्तराखण्ड के संयुक्त प्रयास से बुधवार को देहरादून में वरिष्ठ

नागरिकों एवं दिव्यांगजनों के लिए पहली बार केयर इकॉनॉमी विषय पर विशेष कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में प्रदेश में देखभाल सेवाओं को व्यवस्थित रूप से विकसित कर उन्हें अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा से जोड़ने तथा इसके माध्यम से रोजगार के नए अवसर सृजित करने पर व्यापक मंथन किया गया। केयर इकॉनॉमी के अंतर्गत लोगों की देखभाल, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा दैनिक जीवन से जुड़ी आवश्यकताओं को पूरा करने वाली आर्थिक गतिविधियां एवं सेवाएं शामिल हैं। इनमें बच्चों, वरिष्ठ नागरिकों, बीमार एवं दिव्यांगजनों की देखभाल, स्वास्थ्य सेवाएं, घरेलू कार्य, बाल देखभाल सहित विभिन्न देखभाल संबंधी सेवाएं प्रमुख हैं। कार्यशाला में समाज कल्याण मंत्री खजान दास मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड में परंपरागत रूप से वरिष्ठ नागरिकों एवं दिव्यांगजनों की देखभाल परिवार के सदस्य ही करते हैं, लेकिन बदलती सामाजिक परिस्थितियों में केयर इकॉनॉमी की आवश्यकता तेजी से बढ़ रही है। एकल परिवारों की बढ़ती संख्या तथा महिला एवं पुरुष दोनों के नौकरीपेशा होने से पेशेवर देखभाल सेवाओं की मांग बढ़ रही है। ऐसे में केयर इकॉनॉमी युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड में युवाओं के पलायन के कारण पर्वतीय क्षेत्रों के अनेक गांवों में वरिष्ठ नागरिक अपेक्षाकृत अकेले रह जाते हैं। ऐसे में उनकी सामाजिक, भावनात्मक एवं दैनिक आवश्यकताओं की देखभाल के लिए प्रभावी व्यवस्था विकसित करना आवश्यक है।

सरकार इस दिशा में आवश्यक कदम उठाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि केयर इकॉनॉमी को मजबूत बनाने के लिए सरकार, गैर-सरकारी संगठनों, विशेषज्ञों और सिविल सोसाइटी को मिलकर कार्य करना होगा। कार्यशाला में बताया गया कि वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश में 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों की संख्या 10.38 करोड़ थी, जो कुल आबादी का लगभग 8.6 प्रतिशत थी। अनुमान है कि वर्ष 2050 तक प्रत्येक पांच में से एक व्यक्ति 60 वर्ष से अधि क आयु का होगा तथा वरिष्ठ नागरिकों की संख्या लगभग 35 करोड़ तक पहुंच सकती है। ऐसे में गुणवत्तापूर्ण एवं सुलभ देखभाल सेवाओं की आवश्यकता भविष्य में और अधिक बढ़ने की संभावना है। कार्यशाला में स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल विकास, ग्राम्य विकास एवं वित्त विभाग के अधिकारियों के साथ विषय विशेषज्ञों, वरिष्ठ नागरिकों तथा दिव्यांगजन कल्याण के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं के प्रतिनिधि यों ने प्रतिभाग किया। लतिका रॉय फाउंडेशन एवं हैप्पी फैमिली हेल्थ केयर एंड रिसर्च एसोसिएशन सहित विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों की ओर से केयर इकॉनॉमी से संबंधित विषयों पर प्रस्तुतियां दी गई। कार्यक्रम में सचिव डॉ. श्रीधर बाबू अद्दांकी, निदेशक समाज कल्याण संजय कुमार, अपर सचिव सुंदलाल सेमवाल, निदेशक जनजाति कल्याण संजय टोलिया, अपर सचिव मनमोहन मैनाली, संयुक्त निदेशक गीताराम नौटियाल, मुख्य वित्त नियंत्रक पूजा नेगी सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं अन्य गणमान्य उपस्थित रहे।

# मुख्यमंत्री ने प्रदान की 7 करोड़ की वित्तीय स्वीकृति

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा जनपद पिथौरागढ़ के विधानसभा क्षेत्र पिथौरागढ़ के अन्तर्गत एंचोली जाख मोटर मार्ग में मोती मार्ग प्रवेश द्वार के

निर्माण किये जाने हेतु 8.93 लाख, जनपद चम्पावत के विधानसभा क्षेत्र चम्पावत में सेलागाड से कोटकेन्द्री तक सम्पर्क मार्ग का निर्माण किये जाने हेतु 40.53 लाख तथा जनपद टिहरी के विधानसभा क्षेत्र नई टिहरी में ग्राम पुलिया नामे पंचायत खडीखाल में सडक से भारी केमर गांव डाबरा पानी तोक तक आर०सी०सी० खडिंजा रेलिंग मार्ग का निर्माण किये जाने हेतु 52.06 लाख की स्वीकृति प्रदान करते हुए प्रथम किश्त में 31.23 लाख की धनराशि स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया है। मुख्यमंत्री द्वारा जनपद पिथौरागढ़ के विधानसभा क्षेत्र पिथौरागढ़ में ध्वज जयंती माता मंदिर में श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु विकास कार्य यथा-आवास, पेयजल, शौचालय मार्ग आदि का निर्माण किये जाने हेतु 97.09 लाख की स्वीकृति प्रदान करते हुए प्रथम किश्त में 58.25 लाख, जनपद उत्तरकाशी के विधानसभा क्षेत्र पुरोला के विकासखण्ड नौगांव में रंवाई घाटी के आराध्य देवी श्री रुद्रेश्वर महाराज मंदिर बिल्ला नौगाव का सौन्दर्यीकरण किये जाने हेतु 1.79 करोड़ की स्वीकृति प्रदान करते हुए प्रथम किश्त में 1.07 करोड़ की धनराशि स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया है। मुख्यमंत्री द्वारा जनपद अल्मोड़ा के विधानसभा क्षेत्र सल्ट में मल्ली मनिला मंदिर का सौन्दर्यीकरण किये जाने हेतु 98.80 लाख की स्वीकृति प्रदान करते हुए प्रथम किश्त में 59.28 लाख, जनपद अल्मोड़ा के विधानसभा क्षेत्र जागेश्वर के विकासखण्ड धौलादेवी के न्याय पंचायत क्षेत्र ध्याडी के भेटाबडोली में भीमादेवी मंदिर का सौन्दर्यीकरण किये जाने हेतु 98.50 लाख की स्वीकृति प्रदान करते हुए प्रथम किश्त में 59.1 लाख की धनराशि स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया है। मुख्यमंत्री द्वारा जनपद उध मसिंहनगर के विधानसभा क्षेत्र गदरपुर के ग्राम रामबाग, ग्राम हरिपुरा एवं ग्राम पंचाननपुर में गोविन्द मंदिर/धर्मशाला, मसीत मंदिर/धर्मशाला एवं तालाब के पास मंदिर/धर्मशाला का निर्माण किये जाने हेतु 2.54 करोड़ की स्वीकृति प्रदान करते हुए प्रथम किश्त में ₹ 1.02 करोड़, जनपद पिथौरागढ़ के विधानसभा क्षेत्र डीडीहाट के ग्राम पंचायत सिरड के नैनीपाताल से गाम पंचायत नाघर इंटर कालेज तक सीसी सम्पर्क मार्ग का निर्माण किये जाने हेतु 79.87 लाख की स्वीकृति प्रदान करते हुए प्रथम किश्त में 47.92 लाख तथा विधानसभा क्षेत्र चम्पावत के अन्तर्गत ग्राम पंचायत मैरोली के आन्तरिक मार्गों के इंटरलॉकिंग टाईल्स द्वारा निर्माण एवं ग्राम पंचायत बडपास में आन्तरिक मार्गों के इंटरलॉकिंग टाईल्स द्वारा निर्माण किये जाने हेतु 3.89 करोड की स्वीकृति प्रदान करते हुए प्रथम किश्त में 1.87 करोड की धनराशि स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया है। मुख्यमंत्री ने किया स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्वर्गीय कल्याण सिंह अधिकारी के सम्मान में मूर्ति स्थापित किये जाने का अनुमोदन। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा जनपद चम्पावत के विध नसभा क्षेत्र लोहाघाट के विकासखण्ड बाराकोट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्वर्गीय कल्याण सिंह अधिकारी के सम्मान में मूर्ति स्थापित किये जाने हेतु ₹ 32.49 लाख की धनराशि स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया है।

# स्वतंत्रता दिवस पर 15 अगस्त को बंद रहेंगी जनपद हरिद्वार की सभी मदिरा दुकानें

हरिद्वार। जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जनपद हरिद्वार में संचालित सभी मदिरा दुकानों एवं संबंधित लाइसेंसी प्रतिष्ठानों को बंद रखने के आदेश

जारी किए हैं।जिलाधिकारी द्वारा जारी आदेश में आबकारी अनुज्ञापनों हेतु सामान्य शर्तों के नियम 13(बी) 2 के प्रावधानों के अनुसार 15 अगस्त 2026 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जनपद हरिद्वार में स्थित समस्त विदेशी/देशी मदिरा की दुकाने, डिपार्टमेंटल स्टोर, (एफ.एल.-5डी.एस), गोदाम (एफ.एल-2/ सी.एल-2),बार, (एफ. एल-6/7),एक दिवसीय बार अनुज्ञापन, (एफ. एल-11), (एफ.एल.एम-3) (बॉटलिंग प्लांट), एन.डी.एल.डी. एफ एल- 39/40/41/43 एम. ए-4, स्प्रिट के थोक व फुटकर बिक्री अनुज्ञापन (एफ एल - 16 व एफ एल -17) भाग अनुज्ञापन (आई डी -15/16), सैन्य कैंटीनों (एफ एल -9 /9ए) डिनेचर्ड स्प्रिट, स्पेशल डिनेचर्ड स्प्रिट, आसवनी, बुक्री इत्यादि समस्त आबकारी अनुज्ञापन/समस्त अनुज्ञापन जिसमें स्प्रिट अथवा मादक पदार्थ का उपयोग होता हो को मदिरा की बिक्री परिवहन एवं उपभोग हेतु पूर्ण रूप से बंद किया जाता है। आदेश में यह भी स्पष्ट किया गया है कि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जनपद हरिद्वार में संचालित सभी अनुज्ञापनों को बंदी दिवस के लिए वित्तीय वर्ष 2026-27 हेतु निर्धारित/व्यवस्थित राजस्व में किसी भी प्रकार की क्षतिपूर्ति/छूट देय नहीं होगी।जिलाधिकारी ने नगर मजिस्ट्रेट/उपजिलाधि कारी तथा जिला आबकारी अधिकारी को आदेश का अनुपालन सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए हैं। साथ ही आबकारी निरीक्षकों को अपने-अपने क्षेत्रों में आदेश का कड़ाई से पालन सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए गए हैं।

# मुख्यमंत्री धामी ने पीपलकोटी में की समीक्षा बैठक, रेस्क्यू अभियान में तेजी लाने के दिए निर्देश

गोपेश्वर। मायापुर (पीपलकोटी) स्थित टीएचडीसी की निर्माणाधीन टनल हादसे के बाद मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने टीएचडीसी गेस्ट हाउस, पीपलकोटी में अधिकारियों के साथ बैठक कर राहत एवं बचाव कार्यों की समीक्षा की। मुख्यमंत्री ने टनल में फंसे शेष तीन लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए रेस्क्यू अभियान में तेजी लाने और सभी उपलब्ध संसाधनों एवं तकनीकी विशेषज्ञता का प्रभावी उपयोग करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, आईटीबीपी, पुलिस, प्रशासन एवं टीएचडीसी की टीमों के बीच बेहतर समन्वय बनाए रखने तथा रेस्क्यू टीमों की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखने को कहा। उन्होंने टनल की तकनीकी स्थिति, जल निकासी एवं मलबा हटाने के कार्य की लगातार निगरानी के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने हादसे में मृतकों के परिजनों को नियमानुसार अनुमन्य मुआवजा एवं सहायता राशि शीघ्र उपलब्ध कराने तथा घायलों को बेहतर चिकित्सा सुविधा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रभावित परिवारों को हरसंभव प्रशासनिक सहयोग देने को कहा।

बैठक में कैबिनेट मंत्री एवं प्रभारी मंत्री भरत चौधरी, थराली विधायक भूपाल राम टम्टा, जिला पंचायत अध्यक्ष दौलत सिंह बिष्ट, सचिव आपदा विनोद कुमार सुमन, गढ़वाल आयुक्त आनंद स्वरूप, आईजी गढ़वाल राजीव स्वरूप, जिलाधिकारी गौरव कुमार, पुलिस अधीक्षक सुरजीत सिंह पंवार सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित रहे।

# प्रत्येक श्रमिक की जान बेहद कीमती, सुरक्षित रेस्क्यू सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता : मुख्यमंत्री

गोपेश्वर । मायापुर (पीपलकोटी) स्थित टीएचडीसी की निर्माणाधीन टनल में हुए हादसे के बाद मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने घटनास्थल पर पहुंचकर रेस्क्यू अभियान की स्थिति का जायजा लेने के उपरांत जिला अस्पताल गोपेश्वर पहुंचे। यहां उन्होंने रेस्क्यू किए गए घायल श्रमिकों से मुलाकात कर उनका कुशलक्षेम जाना और उनसे बातचीत की। मुख्यमंत्री ने श्रमिकों से उनके स्वास्थ्य एवं उपचार के बारे में जानकारी ली तथा अस्पताल में उपलब्ध कराई जा रही चिकित्सा व्यवस्थाओं के संबंध में चिकित्सकों से भी जानकारी प्राप्त की। मुख्यमंत्री ने चिकित्सकों को घायल श्रमिकों को बेहतर से बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने तथा उनके उपचार में किसी भी प्रकार की कमी न रहने देने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि घायल श्रमिकों के स्वास्थ्य की लगातार निगरानी की जाए और आवश्यकतानुसार उन्हें सभी जरूरी चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि, प्रत्येक व्यक्ति की जान हमारे लिए बहुत कीमती है। इसके लिए हमारे पास जितने भी साधन उपलब्ध हैं, उन सभी का उपयोग किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि टनल में फंसे प्रत्येक श्रमिक को सुरक्षित बाहर निकालना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है और रेस्क्यू अभियान में किसी भी स्तर पर कमी नहीं रहने दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने बताया कि घटना में प्रभावित श्रमिकों के परिजनों को समय पर सूचना उपलब्ध कराने के लिए संबंधित राज्यों के मुख्यमंत्रियों से भी उन्होंने स्वयं वार्ता की है। साथ ही टनल दुर्घटना के कारणों की जांच के लिए मजिस्ट्रियल जांच के आदेश दे दिए गए हैं। इस दौरान बद्रीनाथ विधायक लखपत सिंह बुटोला, जिला पंचायत अध्यक्ष दौलत सिंह बिष्ट, अपर जिलाधिकारी विवेक प्रकाश, मुख्य चिकित्साधिक्षक डॉ. राजीव पाल सहित अन्य संबंधित अधिकारी एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

# वसंतोत्सव-2026 की स्मृतियों पर आधारित कॉफी टेबल बुक का राज्यपाल ने किया विमोचन

देहरादून। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) ने शुक्रवार को लोक भवन में उद्यान विभाग द्वारा तैयार वसंतोत्सव-2026 की स्मृतियों पर आधारित 'फ्लोरल हीलिंग: नेचर्स पाथ टू

वेल-बीइंग' कॉफी टेबल बुक का विमोचन किया। इस वर्ष आयोजित तीन दिवसीय वसंतोत्सव में पुष्प प्रदर्शनी, विभिन्न प्रतियोगिताएं, विशेष डाक आवरण, स्कूली बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता, योग एवं मार्शल आर्ट प्रदर्शन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने इसे व्यापक जन-उत्सव का स्वरूप प्रदान किया।

पुस्तक विमोचन के अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि 'फ्लोरल हीलिंग' हमें यह संदेश देती है कि प्रकृति हमारे स्वास्थ्य, संतुलन और प्रसन्नता से गहराई से जुड़ी है। उन्होंने वसंतोत्सव की परंपरा को आगे बढ़ाने तथा इसकी स्मृतियों को पुस्तक के माध्यम से संरक्षित करने के लिए उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग तथा आयोजन से जुड़े सभी लोगों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक केवल पुष्पों की सुंदर तस्वीरों का संग्रह नहीं, बल्कि उत्तराखण्ड की प्रकृति, जैव-विविधता, किसानों के परिश्रम, संस्कृति और पुष्प उत्पादन की संभावनाओं का जीवंत दस्तावेज है।

राज्यपाल ने कहा कि उत्तराखण्ड की विविध जलवायु और समृद्ध जैव-विविधता पुष्प उत्पादन एवं उद्यानिकी के लिए बड़ी अनुकूल हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं के लिए पुष्प उत्पादन रोजगार और उद्यमिता का नया क्षेत्र बन सकता है। राज्यपाल ने पुष्प उत्पादन को पर्यटन, होम स्टे और स्थानीय उत्पादों से जोड़कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई गति दी जा सकती है तथा पलायन को रोकने की दिशा में भी सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

इस अवसर पर सचिव श्री सुरेंद्र नारायण पांडे, निदेशक श्री आर.के. सिंह, अपर निदेशक श्री रतन कुमार, संयुक्त निदेशक श्री सुरेश राम एवं उद्यान अधिकारी श्री दीपक पुरोहित उपस्थित रहे।

# ग्राम प्रधानों ने बीडीओ कार्यालय में सांकेतिक तालाबंदी की, 17 अगस्त से अनिश्चितकालीन आंदोलन का ऐलान

अल्मोड़ा। हवालबाग विकासखंड की समस्याओं के समाधान को लेकर ग्राम प्रधान संगठन का आक्रोश को खुलकर सामने आया। मासिक बैठक में अधिकारियों के अनुपस्थित रहने से नाराज प्रधानों ने खंड विकास अधिकारी (बीडीओ) कार्यालय में सांकेतिक तालाबंदी की और चेतावनी दी कि यदि मांगों पर जल्द कार्रवाई नहीं हुई तो 17 अगस्त से विकासखंड कार्यालय में अनिश्चितकालीन तालाबंदी शुरू की जाएगी। प्रधान संगठन के प्रदेश महामंत्री एवं ब्लॉक अध्यक्ष देवेंद्र सिंह नयाल ने कहा कि जिला स्तरीय अधिकारी विकासखंड स्तर की बैठकों में लगातार अनुपस्थित रहते हैं, जिससे प्रधानों की समस्याओं का समाधान नहीं हो पा रहा है। कर्मचारी क्षेत्र में मौजूद नहीं रहते हैं जिससे गाँवों में कार्य प्रभावित हो रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रधानों को दोयम दर्जे पर रखा जा रहा है, जिसका सीधा असर गांवों के विकास कार्यों पर पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि जब तक जिला स्तरीय अधिकारी समस्याओं का समाधान नहीं करते, तब तक आंदोलन जारी रहेगा। वरिष्ठ उपाध्यक्ष देवेंद्र सिंह मेहरा और मंत्री प्रमोद जोशी ने कहा कि विकासखंड के अधिकारियों और कर्मचारियों में प्रधानों के साथ समन्वय का अभाव है। बिना प्रधानों को विश्वास में लिए पंचायत सचिवों के तबादले किए जा रहे हैं, जो संवादहीनता को दर्शाता है। संगठन के महामंत्री विनोद जोशी ने ग्राम पंचायत बैठकों के प्रस्ताव ऑनलाइन अपलोड नहीं होने का मुद्दा उठाते हुए कहा कि प्रस्ताव पोर्टल पर दर्ज नहीं होने से विकास कार्य बाधित हो रहे हैं। वहीं प्रधान मोहन सिंह ने वीबीजी रामजी योजना में मजदूरी बढ़ाने तथा ग्राम पंचायतों के विकास कार्यों के लिए अधिक वित्तीय प्रावधान करने की मांग की।

## सम्पादकीय

# आजादी एक उत्सव है

जब तिरंगा शान से लहराता है। जब सर बुलंद होता है और जन गण मन अधिनायक जय है, भारत भाग्य विधाता ये शब्द कानों में वीरता का रस घोलते हैं तब उस एक लम्हा रोम-रोम में जो सिरहन होती है, उस जज्बे का नाम आजादी और उसका अहसास है। आजादी एक उत्सव है।

आजादी अनगिनत संघर्षों, बलिदानों, सपनों और संकल्पों का परिणाम है, जिसकी नींव पर भारत की लोकतांत्रिक यात्रा खड़ी हुई है। इसलिए जब तिरंगा आसमान में लहराता है, राष्ट्रगान की धुन वातावरण में गूंजती है और बच्चे हाथों में छोटे-छोटे झंडे लेकर मुस्कुराते हुए दिखाई देते हैं, तब वह दृश्य महज एक राष्ट्रीय पर्व का दृश्य नहीं होताख्रवह हमारी सामूहिक स्मृति, हमारी पहचान और हमारे भविष्य की आकांक्षाओं का उत्सव होता है।

यह उत्सव हमें अपने अतीत को याद करने, वर्तमान को समझने और भविष्य के भारत का संकल्प लेने का अवसर देता है। यह पूछने का अवसर देता है कि जिन लोगों ने स्वतंत्र भारत का सपना देखा था, क्या हम उस सपने के करीब पहुंच पाए हैं? क्या आजादी का अर्थ हर नागरिक के लिए समान अवसर, सम्मान, न्याय और गरिमा सुनिश्चित करना हो गया है?

स्वतंत्रता दिवस का उत्सव हमें यह याद दिलाता है कि देश केवल सत्ता या सरकार का नाम नहीं है। देश उसके नागरिकों से बनता है। देश की सड़कों पर मेहनत करता मजदूर भी भारत है, खेत में अन्न उगाता किसान भी भारत है, सीमा पर खड़ा सैनिक भी भारत है, प्रयोगशाला में शोध करता वैज्ञानिक भी भारत है, स्कूल में पढ़ता बच्चा भी भारत है और समाज को नई दिशा देने वाली महिला भी भारत है।

आज यदि हम अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं, तो हमें दूसरों के अधिकारों का भी सम्मान करना होगा। यदि हमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रिय है, तो हमें असहमति का सम्मान भी सीखना होगा। यदि हम न्याय चाहते हैं, तो हमें अपने व्यवहार में न्यायपूर्ण होना होगा। यदि हम स्वच्छ भारत चाहते हैं, तो स्वच्छता की शुरुआत अपने घर और अपने आसपास से करनी होगी। यदि हम भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था चाहते हैं, तो हमें गलत रास्ते से लाभ लेने की मानसिकता को भी बदलना होगा।

आज भारत एक ऐसे दौर से गुजर रहा है जहां संभावनाएं भी बड़ी हैं और चुनौतियां भी। दुनिया भारत की ओर उम्मीद और उत्सुकता से देख रही है। हमारी अर्थव्यवस्था, तकनीक, अंतरिक्ष विज्ञान, डिजिटल क्रांति, स्टार्टअप संस्कृति और युवा शक्ति देश को नई दिशा दे रहे हैं। भारत ने अनेक क्षेत्रों में अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है। लेकिन विकास की इस यात्रा में हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रगति का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे।

किसी देश की असली प्रगति केवल ऊंची इमारतों, चौड़ी सड़कों या बड़े आर्थिक आंकड़ों से नहीं मापी जाती। असली विकास तब दिखाई देता है जब गरीब का बच्चा भी अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सके, जब ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हों, जब युवाओं को रोजगार और अवसर मिलें, जब महिलाओं को सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण मिले, जब किसान अपने परिश्रम का उचित मूल्य प्राप्त करे और जब कोई नागरिक केवल अपनी सामाजिक या आर्थिक स्थिति के कारण पीछे न रह जाए।

तकनीक ने दुनिया को हमारी हथेली में ला दिया है। मोबाइल फोन ने सूचना को कुछ सेकंड की दूरी पर पहुंचा दिया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल सेवाएं और नई तकनीकें जीवन को बदल रही हैं। लेकिन तकनीकी प्रगति के साथ सामाजिक संवेदना कमजोर नहीं होनी चाहिए।

गरीबी का अंत, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगार के पर्याप्त अवसर, सामाजिक समानता, महिला सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण, भ्रष्टाचार पर प्रभावी नियंत्रण और समाज में बढ़ती नफरत को कम करनाख्रऐसे लक्ष्य हैं जिन पर निरंतर काम करने की आवश्यकता है।

भारत की पहचान उसकी विविधता में है। यहां अनेक भाषाएं हैं, अनेक संस्कृतियां हैं, अनेक परंपराएं हैं और जीवन जीने के अनेक तरीके हैं। फिर भी इन सबके बीच एक साझा भावना हमें जोड़ती हैख्रहम भारतीय हैं। यही भारतीयता हमारी सबसे बड़ी ताकत है। आजादी का उत्सव हमें सिखाता है कि राष्ट्रप्रेम और मानवता एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। अपने देश से प्रेम करने का अर्थ दूसरे देश से घृणा करना नहीं है। अपने धर्म, भाषा या संस्कृति पर गर्व करने का अर्थ दूसरों का अपमान करना नहीं है। सच्चा राष्ट्रप्रेम वह है जो अपने देश को बेहतर बनाने की प्रेरणा दे और समाज में भाईचारा बढ़ाए और राष्ट्रनिर्माण कोई एक दिन का कार्यक्रम नहीं है। यह प्रतिदिन चलने वाली प्रक्रिया है। आज हमारे सामने एक ऐसा भारत बनाने का अवसर है जो आर्थिक रूप से मजबूत हो, तकनीकी रूप से सक्षम हो, सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण हो, पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील हो और मानवीय मूल्यों में दुनिया के सामने उदाहरण बने।

# युवा शक्ति को मिले दिशा, सपनों को मिले उड़ान

युवा केवल उम्र की एक अवस्था नहीं, बल्कि ऊर्जा, साहस, कल्पना, परिवर्तन और नवसृजन की चेतना का नाम है। जिस समाज की युवा शक्ति जाग्रत, संवेदनशील और रचनात्मक होती है, वह समाज परिवर्तन की नई इबारत लिखता है। इसके विपरीत जब युवा ऊर्जा दिशाहीन हो जाती है तो वही शक्ति हिंसा, नशे, उग्रवाद, अपराध, निराशा और विध्वंस का कारण बन सकती है। इसलिए आज दुनिया के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह नहीं है कि युवा क्या कर रहे हैं, बल्कि यह है कि उनकी विराट ऊर्जा को किस दिशा में लगाया जा रहा है। इसी चिंतन को वैश्विक स्तर पर महत्व देने के लिए संयुक्त राष्ट्र प्रतिवर्ष 12 अगस्त को अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस मनाता है। वर्ष 2000 से इस दिवस का आयोजन शुरू हुआ। इस वर्ष का विषय है-'विभिन्न परिस्थितियाँ, साझा आकांक्षाएँ।' यह विषय आज की युवा पीढ़ी की वास्तविकता को बहुत गहराई से अभिव्यक्त करता है। दुनिया के युवाओं की परिस्थितियाँ भिन्न हैं। कहीं गरीबी और बेरोजगारी है, कहीं युद्ध और असुरक्षा, कहीं शिक्षा के अवसरों की कमी है, कहीं तकनीकी असमानता और पर्यावरण संकट है, लेकिन इन सबके बीच उनकी आकांक्षाएँ आश्चर्यजनक रूप से समान हैं। वे सम्मानजनक जीवन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सार्थक रोजगार, सुरक्षा, मानसिक सुख-शांति, निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी और बेहतर भविष्य चाहते हैं। दुनिया की सरकारों को यह समझना होगा कि युवा केवल चुनाव के समय याद आने वाला मतदाता नहीं है। वह राष्ट्र की नीति-निर्माण प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार है। जिस युवा के जीवन को प्रभावित करने वाले निर्णय लिये जाते हैं, उसकी आवाज उन निर्णयों में कितनी शामिल है, यह लोकतंत्र की गुणवत्ता का भी महत्वपूर्ण पैमाना है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का प्रस्ताव 2250 युवाओं को शांति निर्माण और हिंसा की रोकथाम में महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में स्वीकार करता है। यह स्वीकारोक्ति इस बात का प्रमाण है कि युवा समस्या नहीं, बल्कि समाधान की शक्ति हैं। आज आवश्यकता है कि हर देश में ऐसी प्रभावी व्यवस्था बने, जिसमें विद्यार्थी, उद्यमी, किसान, वैज्ञानिक, कलाकार, खिलाड़ी और सामाजिक कार्यकर्ता युवा सीधे नीति-निर्माताओं से संवाद कर सकें। केवल युवाओं पर योजनाएँ बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि युवाओं के साथ योजनाएँ बनाना आवश्यक है। भारत की सबसे बड़ी शक्तियों में उसकी युवा आबादी भी है। भारत के युवाओं ने अनेक बार सिद्ध किया है कि उनमें केवल नौकरी पाने की आकांक्षा नहीं, बल्कि कुछ नया करने की बेचैनी भी है। विज्ञान, खेल, तकनीक, उद्यमिता, कला, साहित्य और सामाजिक सेवा से लेकर अनेक

क्षेत्रों में भारतीय युवा अपनी प्रतिभा का परिचय दे रहे हैं। स्वामी विवेकानन्द ने भारत के पुनर्निर्माण में युवा शक्ति की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण माना था। उनका विश्वास था कि जाग्रत, चरित्रवान और संकल्पवान युवा राष्ट्र की दिशा बदल सकता है। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने भी युवाओं के सपनों को भारत के भविष्य से जोड़ा। उनके चिंतन का मूल संदेश था कि बड़े सपने देखो, ज्ञान अर्जित करो और उन सपनों को कर्म में बदलो। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भी भारत के विकास विमर्श में युवा शक्ति, नवाचार, कौशल, उद्यमिता और आत्मनिर्भरता को विशेष महत्व दिया जा रहा है। लेकिन अब अगला चरण इससे आगे जाने का है। युवा को योजनाओं का लाभार्थी नहीं, बल्कि विकास का सह-निर्माता बनाना होगा।

युवा दिवस की सार्थकता तब होगी जब 12 अगस्त के बाद भी युवा के जीवन में कोई सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दे। क्यों न इस वर्ष प्रत्येक शहर में युवा स्वप्न संवाद आयोजित हों, जिसमें युवा लिखें कि वे अपने देश को अगले दस वर्षों में कैसा देखना चाहते हैं। उन सपनों को केवल कागज पर न रखा जाए, बल्कि सरकार, उद्योग, शिक्षण संस्थान और सामाजिक संस्थाएँ मिलकर उनमें से व्यवहारिक योजनाओं को धरातल पर उतारें। प्रत्येक युवा कोई एक उपयोगी कौशल सीखे और समाज के लिए कोई एक जिम्मेदारी स्वीकार करे। प्रत्येक जिले में ऐसे युवा नवाचार केंद्र स्थापित हों, जहाँ स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिए युवा अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता का उपयोग कर सकें। आज युवा शक्ति के सामने सबसे गंभीर चुनौतियों में नशा, डिजिटल लत, हिंसक प्रवृत्तियाँ, मानसिक तनाव, बेरोजगारी और उद्देश्यहीनता हैं। नशे का फैलता जाल केवल व्यक्ति को नहीं, परिवार और राष्ट्र की उत्पादक शक्ति को भी कमजोर करता है। युवाओं को केवल यह कहना पर्याप्त नहीं कि नशा मत करो, बल्कि उन्हें जीवन का ऐसा उद्देश्य देना होगा कि नशे की आवश्यकता ही महसूस न हो। खेल, योग, ध्यान, कला, साहित्य, सेवा, उद्यमिता और सामाजिक गतिविधियों से युवाओं को जोड़ना होगा। खाली समय को रचनात्मक समय में बदलना नशामुक्ति की सबसे प्रभावी सामाजिक रणनीति हो सकती है।

आज की युवा पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच संवाद की कमी भी एक चुनौती है। बुजुर्ग अनुभव के प्रतीक हैं और युवा ऊर्जा के। अनुभव यदि ऊर्जा से नहीं जुड़ेगा तो वह जड़ हो सकता है और ऊर्जा यदि अनुभव से नहीं जुड़ेगी तो दिशाहीन हो सकती है। इसलिए आवश्यकता है अंतरपीढ़ी संवाद की। परिवारों, संस्थाओं और सरकारों को ऐसा वातावरण बनाना होगा जिसमें युवा नई सोच प्रस्तुत करें और वरिष्ठ पीढ़ी अपने अनुभव से उनका मार्गदर्शन करे। अनुभव और ऊर्जा का यह समन्वय राष्ट्र निर्माण की बड़ी शक्ति बन सकता है। आज दुनिया के अनेक हिस्सों में युवा आंदोलन हो रहे हैं। युवाओं की आवाज सत्ता और व्यवस्था तक पहुँच रही है। भारत में भी समय-समय पर युवाओं ने अपनी आकांक्षाओं और असंतोष को आंदोलन का रूप दिया है। लेकिन युवा आंदोलन की सबसे बड़ी सफलता तब होगी जब वह केवल विरोध की आवाज न रहकर विकल्प की आवाज बने। युवा कहे कि हमें केवल शिकायत नहीं करनी, समाधान भी देना है। हमें केवल रोजगार नहीं चाहिए, रोजगार सृजित करने की क्षमता भी चाहिए। हमें केवल अधिकार नहीं चाहिए, हम जिम्मेदारियाँ भी निभाएँगे। हम केवल सत्ता बदलने नहीं, व्यवस्था को बेहतर बनाने आए हैं। यही युवा आंदोलन की नई परिभाषा हो सकती है।

यौवन अपने आप में उपलब्धि नहीं है। युवकत्व चेतना की अवस्था है। चेहरे पर जवानी हो और विचारों में जड़ता हो तो यौवन अधूरा है। ऊर्जा हो लेकिन दिशा न हो तो वही ऊर्जा संकट बन सकती है। इसलिए आज की युवा पीढ़ी को दो चीजों की सबसे अधिक आवश्यकता है-जोश और होश। जोश उसे ऊँचा उड़ाए और होश उसे सही दिशा दे। जोश उसे सपने दिखाए और विवेक उन सपनों को यथार्थ में बदले। जोश उसे संघर्ष करना सिखाए और करुणा उसे मनुष्य से जोड़े। स्वामी विवेकानन्द की प्रेरणा, सुकरात की प्रश्नाकुलता, महात्मा गांधी की करुणा और डॉ. कलाम के सपनों का समन्वय आज के युवा के व्यक्तित्व में होना चाहिए। दुनिया के युवाओं से यह कहना आसान है कि बड़े सपने देखो, लेकिन केवल सपने देखने के लिए कहना पर्याप्त नहीं है। सपनों को आकार देने के लिए अवसरों की संरचना भी करनी होगी।

अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस 2026 का विषय हमें एक महत्वपूर्ण सत्य बताता है कि हमारी परिस्थितियाँ अलग हो सकती हैं, लेकिन हमारी आकांक्षाएँ साझा हैं। भारत का युवा अवसर चाहता है, अफ्रीका का युवा शिक्षा और रोजगार चाहता है, युद्धग्रस्त क्षेत्र का युवा शांति चाहता है, द्वीपीय देशों का युवा सुरक्षित पर्यावरण चाहता है और तकनीकी दुनिया का युवा समान अवसर चाहता है। अर्थात दुनिया के युवा अलग-अलग भाषाएं बोलते हैं, अलग संस्कृतियों में रहते हैं, लेकिन उनके सपनों की भाषा बहुत कुछ समान है। इसलिए आज दुनिया को युवा शक्ति को नियंत्रित करने से अधिक उस पर विश्वास करने की जरूरत है। आइए इस अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस पर हम केवल युवाओं को बधाई न दें, बल्कि उन्हें अवसर दें-अपनी बात कहने का, अपनी प्रतिभा दिखाने का, निर्णय लेने का और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का। सरकारें युवाओं की सुनें, परिवार उनके सपनों को समझें, शिक्षण संस्थान उनकी प्रतिभा को पहचानें, समाज उनके प्रयोगों को अवसर दे और युवा स्वयं अपने भीतर के सामर्थ्य को पहचानें। क्योंकि राष्ट्र का भविष्य केवल संसदों, सरकारी कार्यालयों या योजनाओं की फाइलों में नहीं लिखा जाता, वह युवाओं की आँखों में पल रहे सपनों में लिखा जाता है।

# मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन ने तकनीकी शिक्षा विभाग की समीक्षा की

देहरादून। मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन ने आज सचिवालय में तकनीकी शिक्षा विभाग की समीक्षा की। मुख्य सचिव ने प्रदेश के तकनीकी शिक्षण संस्थानों, फैकल्टी एवं विद्यार्थियों के विषय में विस्तार से जानकारी ली। बैठक के दौरान .उन्होंने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर फोकस करने पर जोर दिया। साथ ही कहा कि हमें शिक्षण संस्थानों एवं इंडस्ट्री के बीच का गैप कम करने की आवश्यकता है। उन्होंने प्रदेश तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र के लिए रोड मैप तैयार किए जाने के निर्देश दिए।

मुख्य सचिव ने कहा कि इंजीनियरिंग और पॉलीटेक्निक कॉलेज से पासआउट होने वाले छात्रों को पीएम इंटर्नशिप योजना का लाभ दिलाने के लिए उनका मार्गदर्शन किए जाने की आवश्यकता है । इसके तहत युवाओं को देश की टॉप 500 कंपनियों में वास्तविक कार्य अनुभव मिलता है, साथ ही प्रति माह स्टाइपेंड और एकमुश्त ज्वाइनिंग अनुदान दिया जाता है। उन्होंने कहा कि हमारे युवाओं को विदेश में भी रोजगार मिल सके इसके लिए अपने कॉलेजों में ओवरसीज एम्प्लॉयर्स को प्लेसमेंट के लिए लगने वाले रोजगार मेलों में आमंत्रित किया जाए। मुख्य सचिव ने प्रदेश में 5-6 स्थानों पर तकनीकी शिक्षा हब के रूप में विकसित किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यहां लैब, लाइब्रेरी और हॉस्टल्स जैसी सभी प्रकार की सुविधाएं एक ही स्थान पर उपलब्ध कराई जाएं। उन्होंने कहा कि नए प्रोजेक्ट्स का होलिस्टिक प्लान तैयार किया जाए, जिसमें लैब, लाइब्रेरी, होस्टल्स आदि का सम्पूर्ण प्लान उपलब्ध हो। उन्होंने पुराने इंजीनियरिंग और पॉलिटेक्निक कॉलेजों से भी सैचुरेशन प्लान तैयार किए जाने की बात कही। उन्होंने कहा कि फंडिंग कोई समस्या नहीं है, अच्छे प्रोजेक्ट्स तैयार किए जाने चाहिए। मुख्य सचिव ने अपने कॉलेजों को मजबूत किए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

उन्होंने कहा कि विभागों को स्टडी और कंसल्टेंसी के लिए एजेंसियां बाहर से हायर करने पड़ते हैं। हम राज्य में ऐसे इंस्टीट्यूशंस तैयार कर सकते हैं, जो विभिन्न विभागों को स्टडी और कंसल्टेंसी उपलब्ध करायें। इसके लिए अपने कॉलेजों को मजबूत किया जाए।साथ ही, उन्होंने इसके लिए फैकल्टी रिक्रूटमेंट पर भी फोकस किए जाने पर जोर दिया। इस अवसर पर सचिव डॉ. रंजीत कुमार सिन्हा, वीसी यूटीयू डॉ. तृप्ता ठाकुर सहित पॉलीटेक्निक कॉलेजों के प्रधानाचार्य उपस्थित थे।

# पश्चिमी उत्तर प्रदेश का शातिर गैंगस्टर पुलिस मुठभेड़ में हुआ घायल

देहरादून। राजधानी देहरादून में पुलिस मुठभेड़ में सहारनपुर का गैंगस्टर बदमाश घायल हो गया। जबकि उसका एक साथी फरार हो गया, जिसकी पुलिस तलाश कर रही हैं। पुलिस के

अनुसार घायल बदमाश गौकशी की घटना में विगत 02 वर्षों से वांछित चल रहा था। पुलिस द्वारा चेकिंग के दौरान रोके जाने पर बदमाश पुलिस को चकमा देकर अपने साथी के साथ मौके से फरार हो गया था। पुलिस टीम द्वारा पीछा करने पर बदमाश द्वारा पुलिस टीम पर फायर कर सरकारी वाहन को क्षतिग्रस्त किया था। पुलिस द्वारा बचाव में किये गये जबाबी फायर में 01 बदमाश घायल हो गया।पुलिस मुठभेड़ में घायल बदमाश के दोनों पैरों में गोली लगी। मौके पर घायल बदमाश के कब्जे से पुलिस को एक 315 बोर का तमंचा, खोखा कारतूस तथा गोकशी की घटना हेतु लाये गये औजार बरामद हुए। मुठभेड़ में घायल बदमाश को तत्काल पुलिस द्वारा उपचार हेतु अस्पताल ले जाया गया।उच्चाधिकारियों द्वारा मौके पर पहुँचकर घटना के संबंध में जानकारी ली। पुलिस के अनुसार मुठभेड़ में घायल बदमाश सहारनपुर का गैंगस्टर है, अभियुक्त के विरूद्ध उ०प्र० तथा उत्तराखंड में पशु क्रूरता सहित विभिन्न अपराधों के लगभग डेढ दर्जन अभियोग पंजीकृत हैं। अभियुक्त पुनः गौकशी की घटना को अंजाम देने की फिराक में अपने साथी के साथ देहरादून आया था।

आगामी स्वन्त्रता दिवस के दृष्टिगत एसएसपी देहरादून द्वारा सभी थाना प्रभारियों को अपने-अपने थाना क्षेत्र में संदिग्ध व्यक्तियों/ वाहनों की चेकिंग हेतु लगातार सघन चेकिंग अभियान चलाने के निर्देश दिए गए हैं, उक्त निर्देशों के क्रम में दून पुलिस द्वारा जनपद के सभी अंतर्जनपदीय/अंतरराज्यीय चौकपोस्ट के साथ-साथ आंतरिक मार्गो पर भी लगातार सघन चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है।

इसी क्रम मे देर रात्रि प्रेमनगर पुलिस द्वारा दरू चौक के पास चेकिंग के दौरान गोरखपुर चौक की तरफ से आती हुई बिना नंबर की एक काले रंग की मोटरसाइकिल में सवार 02 व्यक्तियों को संदिग्धता के आधार पर रुकने का इशारा किया गया तो मोटरसाइकिल सवार व्यक्ति अपने वाहन को तेजी से चलाते हुये मौके से चाय बागान की ओर फरार हो गये, मौके पर मौजूद पुलिस कर्मियों द्वारा तत्काल कंट्रोल रूम के माध्यम से उक्त संदिग्ध वाहन सवारों की तलाश हेतु आसपास के थानों को अवगत कराते हुए उनका पीछा किया गया, पुलिस टीम को पीछा करता देख संदिग्ध बाइक सवार बदमाश पितांबरपुर बनियावाला मार्ग पर मोटरसाइकिल को सड़क किनारे छोड़कर चाय बागान की ओर भाग गये, पुलिस टीम द्वारा पीछा करने पर उक्त व्यक्तियों द्वारा पुलिस टीम पर फायरिंग की गई, जिसमें पुलिस का सरकारी वाहन क्षतिग्रस्त हो गया। पुलिस द्वारा अपने बचाव में किये गये जबाबी फायर में एक बदमाश के दोनों पैरों पर गोली लग गई, जिसे पुलिस द्वारा तत्काल उपचार हेतु अस्पताल ले जाया गया, जबकी उसका साथी अंधेरे का फायदा उठाते हुए मौके से फरार हो गया, जिसकी तलाश की जा रही है। मुठभेड़ में घायल बदमाश की पहचान रईस पुत्र नसीम निवासी मोहल्ला खाताखेड़ी, थाना मंडी, जिला सहारनपुर, हाल निवासी – आजाद कॉलोनी, अलावलपुर रोड, कस्बा छुटमलपुर, थाना फतेहपुर, जिला सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, उम्र 26 वर्ष तथा फरार बदमाश की पहचान नवाब निवासी सहारनपुर के रूप में हुई। मौके से पुलिस टीम को अभियुक्त के कब्जे से एक 315 बोर का तमंचा, 02 खोखा कारतूस तथा सड़क किनारे छोड़ी गई बिना नंबर की स्प्लेंडर मोटरसाइकिल से गौकशी हेतु लायी गई 01 कुल्हाड़ी, 01 चापड़, 02 छुरी व 01 नाइलोन की रस्सी बरामद हुई। पुलिस पर किए गए जानलेवा हमले के संबंध में अभियुक्त के विरुद्ध कोतवाली प्रेम नगर पर मु०अ०सं०- 168/26, धारा - 109 बीएनएस व 3/4/25/27 आर्म्स एक्ट का अभियोग पंजीकृत किया गया। मुठभेड़ में घायल बदमाश सहारनपुर का गैंगस्टर है, जो विगत 02 वर्षों से प्रेम नगर क्षेत्र में हुई गोकशी की घटना में वांछित चल रहा था। उक्त घटना के संबंध में थाना प्रेम नगर पर मु०अ०सं०- 158/24 धारा 25/4 आर्म्स एक्ट व 3/11 गौवंश संरक्षण अधिनियम पंजीकृत है। उक्त अभियोग में पुलिस द्वारा अभियुक्त के साथ घटना में शामिल उसके 04 साथियों को पूर्व में ही गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। अभियुक्त के विरुद्ध गौकशी, चोरी तथा अन्य आपराधिक घटनाओं के उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड में लगभग डेढ़ दर्जन अभियोग पंजीकृत है।

# एक पुस्तक दान करें, ज्ञान का वृक्ष लगाएंः मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी ने जिलाधिकारी को भेंट की 10 पुस्तकें

रुद्रप्रयाग। जनपद मुख्यालय में चलाए जा रहे ष्एक पुस्तक दान करें, ज्ञान का वृक्ष लगाएंष अभियान को लगातार जनसमर्थन मिल रहा है। इसी कड़ी में मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. आशीष रावत ने जिलाधिकारी विशाल मिश्रा से भेंट कर पुस्तकें प्रदान करते हुए अपना योगदान सुनिश्चित किया। जिलाधिकारी कार्यालय में हुई इस भेंट के दौरान डॉ. रावत ने अभियान के लिए 10 पुस्तकें जिलाधिकारी को सौंपीं। इस अवसर पर जिलाधिकारी विशाल मिश्रा ने कहा कि इस अभियान में समाज के सभी वर्गों का

महत्वपूर्ण योगदान मिल रहा है, जिससे पुस्तकालयों को समृद्ध बनाने में मदद मिलेगी। उन्होंने जिले के अधिकारियों, कर्मचारियों और आमजन से भी इस पुण्य कार्य में जुड़ने का आह्वान किया। जिलाधिकारी ने कहा कि एक-एक पुस्तक के दान से ज्ञान का वृक्ष और मजबूत होगा और जरूरतमंद विद्यार्थियों को पढ़ने की सामग्री उपलब्ध हो सकेगी। डॉ. आशीष रावत ने कहा कि किताबें ज्ञान का सबसे बड़ा माध्यम हैं और इस अभियान के माध्यम से समाज में पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा।

# गरीब बस्तियों में जबरन स्मार्ट मीटर लगाने का विरोध

देहरादून। बिजली विभाग द्वारा गरीब बस्तियों में कथित तौर पर जबरदस्ती स्मार्ट प्री-पेड मीटर लगाए जाने के विरोध में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) ने जिलाधिकारी कार्यालय और मुख्य सचिव को एक ज्ञापन सौंपा, जिसमें इस प्रक्रिया को तत्काल रोकने और उपभोक्ताओं की सहमति के बिना मीटर न लगाने की मांग की गई। जोर जबरदस्ती व गुमराह करने वाली कर्मचारियों व अधिकारियों पर कार्यवाही की मांग की! पार्टी ने आरोप लगाया कि स्मार्ट मीटर, जिन्हें वे ष्हर घर में एडानी बमष कह रहे हैं, निजी कंपनियों के लाभ के लिए लगाए जा रहे हैं और इससे आम जनता, विशेषकर गरीब उपभोक्ताओं, पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ेगा तथा उनकी गाडी कमाई की लूटखसौट हो रही है, उनके मूल मीटरों, कागजात व सिक्योरिटी को खुर्दबुर्द किया जा रहा है, माकपा नेताओं ने कहा कि इसी सरकार के नेताओं ने चुनाव से पहले स्मार्ट मीटर का विरोध किया था, लेकिन अब वह चुपचाप इसे तेजी से लागू कर रही है।

ज्ञापन में मांग की गई कि बिजली विभाग गरीब बस्तियों में मीटर लगाने का अभियान बंद करे और पहले से लगाए गए मीटरों को हटाए। पार्टी ने चेतावनी दी कि यदि सरकार ने उनकी मांग नहीं मानी, तो वे राज्यव्यापी आंदोलन तेज करेंगे। यह घटनाक्रम ऐसे समय में हुआ है जब देश के कई हिस्सों में स्मार्ट मीटर के विरोध में आवाजें उठ रही हैं। पहले भी माकपा ने बढ़े हुए बिजली बिलों और समायोजन शुल्क के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किए हैं। पार्टी का कहना है कि स्मार्ट मीटर बिजली क्षेत्र के निजीकरण की दिशा में एक कदम है, जो आम लोगों के हितों के खिलाफ है

# मुख्यमंत्री धामी ने विदेश मंत्री को लिखा पत्र

देहरादून। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने सऊदी अरब में बंधक जैसी स्थिति में रह रहे उत्तराखंड के उत्तरकाशी निवासी श्री इंद्रमणि नौटियाल की सकुशल स्वदेश वापसी के लिए विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर को पत्र लिखकर भारत सरकार के स्तर से तत्काल आवश्यक कार्रवाई किए जाने का अनुरोध किया है। मुख्यमंत्री ने प्रकरण में श्री नौटियाल को आवश्यक न्यायिक एवं आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने तथा उन्हें बंधक अवस्था से मुक्त कराकर सकुशल भारत वापस लाने के लिए संबंधित स्तर पर प्रभावी हस्तक्षेप का आग्रह किया है।

श्री इंद्रमणि नौटियाल पुत्र श्री देवी राम नौटियाल वर्ष 2018 में रोजगार के लिए सऊदी अरब गए थे। वहां वे पिकक रोड्स एंड कॉन्ट्रेक्टिंग कंपनी, रियाद (सऊदी अरब) में ट्रक चालक के रूप में कार्यरत थे।

वर्ष 2018 में कार्य अवधि के दौरान एक गंभीर सड़क दुर्घटना हो गई थी। इसके बाद सऊदी अरब की न्यायिक प्रक्रिया के तहत श्री नौटियाल को एक वर्ष के कारावास तथा ट्रक बीमा एवं पंजीकरण संबंधी कमी के दृष्टिगत कंपनी मालिक पर 9 लाख सऊदी रियाल का जुर्माना लगाए जाने का निर्णय हुआ था। जुर्माने की भारतीय मुद्रा में अनुमानित राशि लगभग ₹2.29 करोड़ बताई गई है। घटना के कई वर्ष बीत जाने के बावजूद कंपनी मालिक द्वारा जुर्माने की राशि का भुगतान नहीं किया गया है और श्री नौटियाल को कथित रूप से बंधक जैसी स्थिति में रखकर जुर्माना अदा करने के लिए दबाव बनाया जा रहा है। उनकी पत्नी एवं पुत्री द्वारा अपने स्तर से श्री नौटियाल की स्वदेश वापसी के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयास किए गए, लेकिन अपेक्षित सहायता नहीं मिल सकी। इसके कारण परिवार मानसिक एवं आर्थिक रूप से अत्यंत कठिन परिस्थितियों का सामना कर रहा है।

मुख्यमंत्री ने विदेश मंत्रालय से तत्काल मानवीय हस्तक्षेप का किया अनुरोध

मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने केंद्रीय विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर को भेजे पत्र में पूरे प्रकरण का संदर्भ देते हुए श्री इंद्रमणि नौटियाल को बंधक अवस्था से मुक्त कराने, आवश्यक न्यायिक एवं आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने तथा उनकी सकुशल स्वदेश वापसी सुनिश्चित कराने के लिए तत्काल संबंधित अधिकारियों को निर्देशित करने का अनुरोध किया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विदेश में कठिन परिस्थितियों में फंसे किसी भी उत्तराखंडी नागरिक की सहायता के लिए राज्य सरकार हर संभव प्रयास करेगी। उन्होंने केंद्र सरकार एवं विदेश मंत्रालय से प्रकरण में मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए प्रभावी हस्तक्षेप की अपेक्षा की है, ताकि श्री नौटियाल को राहत मिल सके और उनका परिवार अपने प्रियजन की सकुशल स्वदेश वापसी की उम्मीद पूरी कर सके।

# सीएम ने किया दून विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं से संवाद

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने आज दून विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं से संवाद किया। इस दौरान विद्यार्थियों ने पलायन रोकने, युवाओं को रोजगार से जोड़ने, उत्तराखण्ड को उच्च शिक्षा का हब बनाने, विज्ञान, तकनीक एवं ।P के दौर में रोजगार की नई संभावनाओं तथा देहरादून में यातायात जाम की समस्या के समाधान को लेकर मुख्यमंत्री से सवाल पूछे।

पलायन रोकने और युवाओं को रोजगार से जोड़ने से संबंधित सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में अब रिवर्स माइग्रेशन की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ रही है। मुख्यमंत्री उद्यमशाला योजना, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना एवं सौर स्वरोजगार योजना सहित पर्यटन, उद्योग और फिल्म नीति के माध्यम से युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार के नए अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। स्वयं सहायता समूहों को सशक्त बनाने और उनके माध्यम से स्थानीय स्तर पर आजीविका के अवसर बढ़ाने के लिए भी राज्य सरकार द्वारा निरंतर कार्य किया जा रहा है।

उच्च शिक्षा को मजबूत करने के संबंध में मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार उच्च शिक्षण संस्थानों के आधुनिकीकरण और आधारभूत सुविधाओं के विस्तार पर विशेष ध्यान दे रही है। देहरादून में देश की पांचवीं साइंस सिटी का निर्माण किया जा रहा है, जिससे प्रदेश में विज्ञान एवं अनुसंधान के क्षेत्र में नए अवसर उपलब्ध होंगे तथा युवाओं को आधुनिक वैज्ञानिक संसाधनों से जुड़ने का अवसर मिलेगा।

विज्ञान, तकनीक एवं ।P के दौर में रोजगार की संभावनाओं से जुड़े सवाल पर उन्होंने कहा कि तकनीकी बदलावों के साथ रोजगार के स्वरूप में परिवर्तन हो रहा है और नई संभावनाएं भी तेजी से सामने आ रही हैं। उन्होंने युवाओं से कहा कि उन्हें बदलती तकनीक के अनुरूप अपने कौशल को विकसित करते हुए 'फ्यूचर रेडी' बनना होगा। सरकार भी युवाओं को आधुनिक कौशल एवं नई तकनीकों से जोड़ने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है।

देहरादून में यातायात जाम की समस्या के संबंध में मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार इसके स्थायी समाधान की दिशा में गंभीरता से कार्य कर रही है। बिंदाल और रिस्पना नदी के ऊपर एलिवेटेड रोड के निर्माण की दिशा में कार्य किए जा रहे हैं।

इन परियोजनाओं के पूरा होने से देहरादून शहर में यातायात व्यवस्था को बेहतर बनाने और जाम की समस्या के समाधान में मदद मिलेगी।

## राष्ट्रीय लोक अदालत में अधिक से अधिक मामलों के समझौते के आधार पर निस्तारण पर जोर

देहरादून। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण के विजन के अनुरूप लंबित मुकदमों का बोझ कम करने तथा वादकारियों को सुलभ, त्वरित और किफायती न्याय उपलब्ध कराने के उद्देश्य से उत्तराखंड उच्च न्यायालय विधिक सेवा समिति के तत्वावधान में उच्च न्यायालय परिसर, नैनीताल में महत्वपूर्ण पूर्व-बैठक आयोजित की गई। बैठक में विशेष रूप से मोटर दुर्घटना दावा न्यायाधिकरण से संबंधित उच्च न्यायालय में लंबित मामलों के शीघ्र निस्तारण पर मंथन किया गया।

बैठक की अध्यक्षता माननीय न्यायमूर्ति श्री मनोज कुमार तिवारी एवं माननीय न्यायमूर्ति श्री राकेश थपलियाल ने की। इसमें विभिन्न बीमा कंपनियों के राज्य प्रमुख एवं वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया। बैठक में लंबित एमएसीटी मामलों को आपसी समझौते के माध्यम से शीघ्र निस्तारित कर वादकारियों को त्वरित मुआवजा उपलब्ध कराने की कार्ययोजना पर विस्तार से चर्चा की गई।

समिति की सचिव नेहा कुशवाहा ने प्रदेश की आम जनता एवं वादकारियों से अपील की कि वे उच्च न्यायालय में लंबित अपने एमएसीटी मामलों के साथ ही ऐसे अन्य मामलों की भी पहचान करें, जिनका कानून के अनुसार राजीनामा अथवा आपसी समझौते के आधार पर निस्तारण संभव है। इनमें दीवानी मामले, शमनीय आपराधिक मामले, पारिवारिक एवं वैवाहिक विवाद, श्रम एवं रोजगार विवाद, बैंक रिकवरी तथा अन्य शमनीय प्रकृति के मामले शामिल हैं। उन्होंने वादकारियों से आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया।

बैठक में बताया गया कि राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से मामलों का त्वरित एवं अंतिम निस्तारण संभव है। इससे वादकारियों को बार-बार न्यायालय के चक्कर लगाने, लंबी कानूनी प्रक्रिया तथा अतिरिक्त खर्च से राहत मिलती है। आपसी सहमति से विवाद का समाधान होने के कारण भविष्य में विवाद की संभावना भी कम होती है। लोक अदालत में निस्तारित मामलों में नियमानुसार न्यायालय शुल्क की वापसी का प्रावधान भी है। बैठक के अंत में माननीय न्यायमूर्तिगण ने निर्देश दिए कि मामलों के निस्तारण के प्रयास केवल एमएसीटी तक सीमित न रहें, बल्कि पारिवारिक विवाद, श्रम मामले, बैंक रिकवरी एवं शमनीय आपराधिक मामलों सहित अन्य समझौता योग्य मामलों में भी सुलह की संभावनाएं तलाश की जाएं।

विशेष रूप से पुराने लंबित मामलों की पहचान कर उनके शीघ्र निस्तारण के लिए सकारात्मक एवं समन्वित प्रयास करने पर जोर दिया गया। माननीय न्यायमूर्तिगण ने बीमा कंपनियों एवं संबंधित संस्थाओं को वादकारियों के साथ बेहतर समन्वय स्थापित करते हुए लोक अदालत के माध्यम से अधिक से अधिक मामलों के समयबद्ध समाधान में सक्रिय भूमिका निभाने के निर्देश दिए। समिति ने सभी संबंधित पक्षों से उच्च न्यायालय के निर्देशों का अनुपालन करते हुए अधिकाधिक मामलों को समझौते के आधार पर निस्तारित कराने में सहयोग की अपेक्षा की है।

# फिल्म आदमी और इंसान को रिलीज हुए 57 साल हो गए

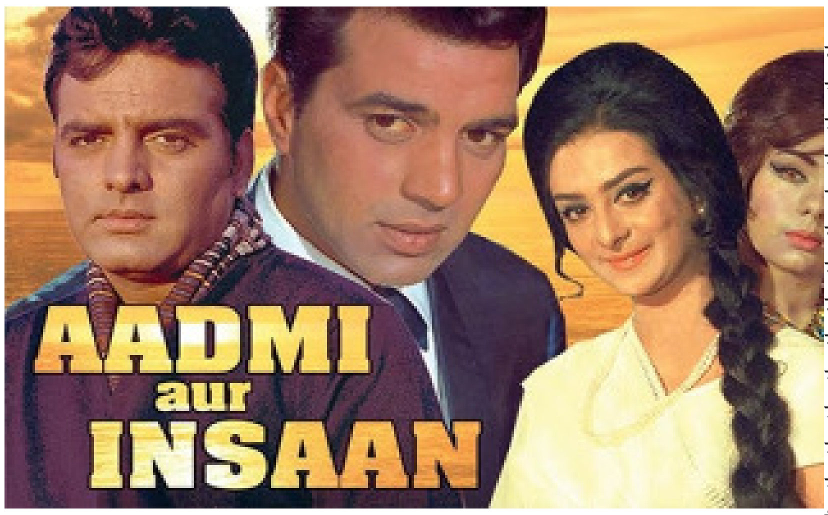


आदमी और इंसान 1970 में बनी हिंदी फिल्म है, जोबीआर चोपड़ाऔरयश चोपड़ा। इसमेंध र्मेंद्र,सायरा बानो,फिरोज खान,मुमताज,जॉनी वॉकर,मदन पुरी,अजीत,अनवर हुसैन,इफ्तिखार,अचला सचदेव,कामिनी कौशलऔर अन्य शामिल हैं। फिल्म का संगीतरविऔर गीतसाहिर लुधियानवी। एक धनी और स्वतंत्र उद्योगपति, जय किशन, मुनीश मेहरा नामक एक मध्यमवर्गीय युवक से मित्रता करता है, उसे विदेश जाकर इंजीनियर की आवश्यक योग्यता प्राप्त करने के लिए आर्थिक सहायता देता है और फिर उसे अपनी एक निर्माण परियोजना में काम पर रख लेता है। मीना खन्ना एक सरकारी अधिकारी की बेटी है। मुनीश और मीना मिलते हैं और एक-दूसरे से प्यार करने लगते हैं। जय भी मीना की ओर आकर्षित हो जाता है। कुछ समय बाद, जय को पता चलता है कि मुनीश मीना से प्यार करता है और वह क्रोधित हो जाता है। इसके बाद वह मुनीश को नौकरी से निकाल देता है और सुनिश्चित करता है कि उसे कहीं और नौकरी न मिले। कई असफल प्रयासों के बाद, मुनीश को सरकार द्वारा नौकरी मिल जाती है और उसे एक रेलवे पुल के ढहने की जांच का काम सौंपा जाता है। मुनीश को पता चलता है कि घटिया सामग्री का उपयोग करने के कारण जय इस दुर्घटना के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार था। अब मुनीश के पास जय से बदला लेने और उसे बर्बाद करने के सारे साधन हैं और वह अपने नियोक्ता को इसकी सूचना देता है। लेकिन जब मुनीश को पूरी रिपोर्ट देने का समय आता है, तो वह मना कर देता है, और सरकार के पास रिश्वत लेने और अपनी रिपोर्ट नष्ट करने के आरोप में उस पर मुकदमा चलाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता। और उसके खिलाफ पेश होने वाला मुख्य गवाह कोई और नहीं बल्कि जय है। मुनीश किस तरह अन्याय से लड़ता है और अपना नाम साफ करता है, यही बाकी की कहानी है।

जय किशन(फिरोज खान) एक अमीर इंडस्ट्रीलिस्ट है। एक दिन जय किशन की मुलाकात होती है मुनीश मेहरा(धर्मेंद्र) से। मुनीष एक होनहार स्टूडेंट है लेकिन गरीब घर से है। जय किशन मुनीष की मदद करता है। जय किशन मुनीष को विदेश पढ़ने भेजता है ताकि मुनीष इंजीनियर बन सके।

मुनीष जब इंजीनियर बनकर भारत वापस लौटता है तो जय किशन उसे अपनी एक कंस्ट्रक्शन कंपनी में एक बड़े ओहदे पर काम पर रख लेता है और एक बड़े प्रोजेक्ट की जिम्मेदारी मुनीष को देता है। एक दिन मुनीष की मुलाकात मीना खन्ना(सायरा बानो) से होती है। मीना खन्ना एक सरकारी अफसर की बेटी है। मुनीष और मीना एक-दूजे को पसंद करने लगते हैं। जय किशन भी मीना को पसंद करता है। लेकिन वो नहीं जानता कि मीना मुनीष को चाहती है। जब उसे मीना और मुनीष की मुहब्बत की खबर मिलती है तो वो गुस्से से पागल हो जाता है। वो मुनीष को नौकरी से निकाल देता है। और किसी और कंपनी में भी मुनीष की नौकरी नहीं लगने देता। मुनीष की जिंदगी में तमाम चुनौतियां आ जाती हैं। हालांकि काफी कोशिश करने के बाद मुनीष को एक सरकारी नौकरी मिल जाती है। सरकार मुनीष को एक रेलवे ब्रिज की इन्क्वायरी की जिम्मेदारी देती है। वो रेलवे ब्रिज कुछ दिन पहले ही बना था लेकिन फिर गिर गया।

मुनीष जांच करता है तो उसे पता चलता है कि उस पुल के गिरने का जिम्मेदार जय किशन है। जय किशन ने घटिया क्वालिटी का सामान पुल के निर्माण में इस्तेमाल किया था इसलिए पुल गिर गया था। पहले तो मुनीष जय किशन से बदला लेने का इरादा करता है। वो अपने बॉस को बताता है कि जय किशन ही वजह से पुल गिरा था। लेकिन बाद में मुनीष को खुद पर किए गए जय किशन के अहसान याद आ जाते हैं। वो अपनी रिपोर्ट में जय किशन को निर्दोष बता देता है। मुनीष की ये बात उसके बॉस को पसंद नहीं आती। वो मुनीष को गिरफ्तार करा देता है। मुनीष पर इल्जाम लगाया जाता है कि उसने जय किशन से रिश्वत लेकर ये रिपोर्ट तैयार की है। मामला जब अदालत में जाता है तो मुनीष को पता चलता है कि उसके खिलाफ गवाही देने कोई और नहीं, जय किशन खुद आया है। तो क्या जय किशन मुनीष के खिलाफ झूठी गवाही देगा? क्या मुनीष को सजा हो जाएगी? जय किशन मुनीष से मीना को छीन पाने में कामयाब हो जाएगा? ये सब आपको पता चलेगा ये फिल्म देखने के बाद। इस फिल्म का नाम है आदमी और इंसान। आज इस फिल्म को रिलीज हुए 57 साल हो गए। 8 अगस्त 1969 को ये फिल्म रिलीज हुई थी। ये फिल्म डायरेक्ट की थी यश चोपड़ा ने। और इसके प्रोड्यूसर थे बी.आर.चोपड़ा। अख्तर-उल-ईमान ने इस फिल्म की कहानी लिखी थी। फिल्म का संगीत कंपोज किया था रवि जी ने। और सभी गीत लिखे थे साहिर लुधियानवी जी ने। फिल्म में कुल नौ गीत हैं जिनमें से आठ महेंद्र कपूर व आशा भोसले जी ने गाए हैं। जबकी एक गीत गाया है रफी साहब ने फिल्म के प्रमुख कलाकार हैं फिरोज खान, धर्मेंद्र, सायरा बानो, मुमताज, जॉनी वॉकर, रंधावा, अजीत, अनवर हुसैन, इफ्तेखार, गजानन जागीरदार, कामिनी कौशल, पूनम सिन्हा, मनमोहन कृष्ण, रुपेश कुमार, नाना पलसिकर, मदन पुरी, जगदीश राज, राम अवतार और अचला सचदेव। चलिए इस फिल्म से जुड़ी कुछ रोचक बातें जानते हैं।

ये फिल्म फिरोज खान के करियर की सबसे अहम फिल्मों में से एक थी। यूं तो इस फिल्म का प्रदर्शन वैसा नहीं रहा था जैसा कि इससे उम्मीद की गई थी। लेकिन इस फिल्म से फिरोज खान पर लगा बी-ग्रेड हीरो का ठप्पा हट गया था। और इसके बाद फिरोज खान को किसी और बी-ग्रेड फिल्म में काम नहीं करना पड़ा। फिरोज खान को इस फिल्म के लिए फिल्मफेयर ने बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर अवॉर्ड से सम्मानित किया था। जबकी पहले ये रोल राज कुमार को ऑफर हुआ था। मगर राज कुमार ने ये रोल ठुकरा दिया था। कहा जाता है कि राज कुमार ने ये रोल इसलिए ठुकराया था क्योंकि उन्हें ये पसंद नहीं आ रहा था कि धर्मेंद्र उन्हें फिल्म में थप्पड़ लगाएंगे। राज कुमार ने कहा था कि एक जूनियर से वो तमाचा खाने वाला सीन नहीं करेंगे। इस फिल्म के रिलीज होने के बाद धर्मेंद्र और यश चोपड़ा के रिश्ते काफी खराब हो गए थे। धर्मेंद्र ने कहा था कि यश चोपड़ा ने जैसा रोल उन्हें एक्सप्लेन किया था फिल्म में वो उससे एकदम अलग दिखाई दिया था। धर्मेंद्र यश चोपड़ा से इतना नाराज हुए थे कि उन्होंने फिर कभी यश चोपड़ा की किसी फिल्म में काम नहीं किया। सालों बाद यश चोपड़ा ने धर्मेंद्र के बेटे सनी देओल संग फिल्म डर बनाई।

## ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ 1857 के भारतीय विद्रोह में एक भारतीय जनरल थे तांतिया टोपे

देहरादून। तांतिया टोपे जिन्हे तात्या टोपे भी कहा जाता हैं ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ 1857 के भारतीय विद्रोह में एक भारतीय जनरल थे। रामचंद्र पांडुरंगा येवलकर का जन्म नासिक के पास येओला में एक मराठी देशस्थ ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बिठूर के नाना साहब के निजी अनुयायी , उन्होंने अंग्रेजों द्वारा कानपुर (तब कावनपुर के नाम से जाना जाता था) पर पुनः कब्जा करने और जनरल विंडहैम को शहर से पीछे हटने के लिए मजबूर करने के बाद ग्वालियर टुकड़ी के साथ आगे बढ़े। बाद में, तांतिया टोपे झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की सहायता के लिए आए और उनके साथ ग्वालियर शहर पर कब्जा कर लिया। हालाँकि, उन्हें रानोद में जनरल नेपियर की ब्रिटिश भारतीय सेना ने हरा दिया और सीकर में एक और हार के बाद , उन्होंने अभियान छोड़ दिया। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, तांतिया टोपे के पिता पांडुरंग येवलकर और माता रुखमा बाई थींटोपे जन्म से मराठा वशिष्ठ ब्राह्मण थे। एक सरकारी पत्र में उन्हें बड़ौदा का मंत्री बताया गया था, जबकि एक अन्य पत्र में उन्हें नाना साहब के समान बताया गया था। उनके मुकदमे में एक गवाह ने तांतिया टोपे का वर्णन ष्मध्यम कद-काठी के, गेहूँ के रंग वाले और हमेशा सफेद चुकरी-दार पगड़ी पहने रहने वाले व्यक्तिष के रूप में किया।

5 जून 1857 को कानपुर में विद्रोह भड़कने के बाद, नाना साहब स्वतंत्रता सेनानियों के नेता बन गए। जब 25 जून 1857 को कानपुर में ब्रिटिश सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया, तो जून के अंत में नाना साहब को पेशवा घोषित कर दिया गया। हार के बाद, नाना साहब की सेना को बिठूर वापस लौटना पड़ा, जिसके बाद हैवलॉक गंगा नदी पार करके अवध वापस चले गए। तांतिया टोपे ने बिठूर से नाना साहब के नाम पर काम करना शुरू किया।

तांतिया टोपे कानपुर नरसंहार के प्रमुख नेताओं में से एक था , जो 27 जून 1857 को हुआ था। इसके बाद, टोपे ने अच्छी रक्षात्मक स्थिति बनाए रखी, जब तक कि 16 जुलाई 1857 को ब्रिटिश सेना ने उसे खदेड़ नहीं दिया। बाद में, उसे कानपुर के दूसरे युद्ध में जनरल सिरिल ने हराया, जो 19 नवंबर 1857 को शुरू हुआ और सत्रह दिनों तक चला।

सर कॉलिन कैंपबेल के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना के जवाबी हमले में टोपे और उसकी सेना हार गई। टोपे और अन्य विद्रोही घटनास्थल से भाग गए और उन्हें झांसी की रानी के पास शरण लेनी पड़ी , साथ ही उन्होंने रानी की सहायता भी की। बाद में, ब्रिटिश आक्रमण के दौरान झांसी की सहायता करने के बाद, तांतिया और राव साहब ने रानी लक्ष्मीबाई को हमले से सफलतापूर्वक बचा लिया। रानी लक्ष्मीबाई के साथ मिलकर, उन्होंने ग्वालियर किले पर कब्जा कर लिया और ग्वालियर से नाना साहब पेशवा के नाम से हिंदवी स्वराज (हिंदू स्वशासन) की घोषणा की। अंग्रेजों के हाथों ग्वालियर खोने के बाद, टोपे और नाना साहब के भतीजे राव साहब राजपूताना (वर्तमान राजस्थान ) भाग गए। वे टोंक की सेना को अपने साथ शामिल करने में सफल रहे। 1857 के विद्रोह को अंग्रेजों द्वारा कुचल दिए जाने के बाद भी, तांतिया टोपे ने जंगलों में एक गुरिल्ला लड़ाके के रूप में प्रतिरोध जारी रखा। उन्होंने चरखारी की घेराबंदी में रतन सिंह को भी हराया। उन्होंने राज्य की सेनाओं को राजा के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया और बनास नदी पर खोई हुई तोपखाने की भरपाई करने में सफल रहे। इसके बाद टोपे अपनी सेना लेकर इंदौर की ओर बढ़े, लेकिन जनरल जॉन मिशेल के नेतृत्व में अंग्रेजों ने उनका पीछा किया और वे सिरोंज की ओर भाग गए। टोपे ने राव साहब के साथ मिलकर अपनी संयुक्त सेनाओं को विभाजित करने का निर्णय लिया ताकि वे एक बड़ी सेना के साथ चंदेरी जा सकें और राव साहब दूसरी ओर एक छोटी सेना के साथ झांसी जा सकें।

हालाँकि, अक्टूबर में वे फिर से एकजुट हो गए और छोटा उदयपुर में उन्हें एक और हार का सामना करना पड़ा। टोपे ने अपने समक्ष लगाए गए आरोपों को स्वीकार किया, लेकिन कहा कि उन्हें केवल उनके स्वामी, पेशवा के समक्ष ही जवाबदेह ठहराया जा सकता है । उन्हें 18 अप्रैल 1859 को सिपरी में फाँसी दे दी गई। हर साल राज्य सरकार और स्थानीय लोग इस दिन तात्या टोपे को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और शहीद मेला आयोजित करते हैं।

# चारधाम यात्रा : 114 दिनों में दर्शनार्थियों की संख्या 47 लाख पार

देहरादून। उत्तराखण्ड में मानसून की बाधाओं और चुनौतियों के बावजूद चारधाम यात्रा नया रिकॉर्ड बनाने की ओर अग्रसर है। प्रदेश सरकार श्रद्धालुओं की सुरक्षा को सर्वोपरि रखते हुए यात्रा को नियंत्रित और आवश्यकता के अनुसार रोककर संचालित कर रही है, लेकिन तीर्थयात्रियों की आस्था में कोई कमी नहीं आई है। 114 दिनों में ही दर्शनार्थियों की संख्या 47 लाख के पार पहुंच चुकी है। यह आंकड़ा पिछले वर्ष की तुलना में साढ़े चार लाख से अधिक है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देश पर श्रद्धालुओं की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए यात्रा को बेहद सतर्कता और निगरानी के साथ संचालित किया जा रहा है। मानसून की सक्रियता को देखते हुए सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी खुद राज्य आपदा कंट्रोल रूम के माध्यम से आपदा प्रबंधन पर नजर रखे हुए हैं। चारों धामों और यात्रा पड़ावों में यात्रियों के ठहरने, खाने और अन्य सभी जरूरी इंतजाम किए गए हैं। भूस्खलन की दृष्टि से संवेदनशील स्थानों पर यात्रियों की मदद के लिए सुरक्षा जवानों की तैनाती की गई है। प्रदेश सरकार के बेहतर आपदा प्रबंधन और इंतजामों के चलते यात्रा नया कीर्तिमान बनाने की ओर बढ़ रही है। इस वर्ष 19 अप्रैल को गंगोत्री एवं यमुनोत्री धाम के कपाटोद्घाटन के साथ चारधाम यात्रा का आगाज हुआ था। सोमवार 10 अगस्त तक इस यात्राकाल के 114 दिनों में कुल 47 लाख 02 हजार 703 श्रद्धालु चारधाम दर्शन कर चुके हैं, जबकि बीते वर्ष 2025 में इतनी ही अवधि में 42 लाख 34 हजार 147 यात्री चारधाम दर्शन को पहुंचे थे। यह आंकड़ा पिछले वर्ष की तुलना में 04 लाख 68 हजार 556 अधिक है। चारों धामों में अब तक की कुल संख्या की बात करें तो बद्रीनाथ में 16 लाख 12 हजार 112, केदारनाथ में 14 लाख 50 हजार 116, गंगोत्री में 07 लाख 37 हजार 629 और यमुनोत्री धाम में 06 लाख 62 हजार 347 यात्री दर्शन कर चुके हैं। जबकि हेमकुंट साहिब में 02 लाख 40 हजारे 499 श्रद्धालु शीश नवा चुके हैं।

चारों धामों में एक दिन में पहुंचे 15 हजार से अधिक श्रद्धालु

मौसम लगातार खराब होने और प्रशासनिक अलर्ट के बावजूद सोमवार को 15 हजार 376 श्रद्धालु चारधाम दर्शन को पहुंचे। इनमें सर्वाधिक 9559 यात्री बद्रीनाथ धाम पहुंचे। जबकि केदारनाथ में 4170, गंगोत्री में 1204 और यमुनोत्री धाम में 443 श्रद्धालुओं न दर्शन किए।

बद्रीनाथ पहुंचे 16.12 लाख से अधिक श्रद्धालु

भगवान बद्रीविशाल के दर्शनों को श्रद्धालुओं में खासा उत्साह है। 23 अप्रैल से शुरू हुई यात्रा सोमवार 10 अगस्त को 110 दिन की अवधि पूर्ण कर चुकी है। इस दौरान 16 लाख 12 हजार 112 श्रद्धालु बद्रीनाथ धाम में शीश नवा चुके हैं। पिछले वर्ष की तुलना में इस बार 03 लाख 50 हजार 192 अधिक तीर्थयात्री दर्शनों को पहुंच चुके हैं। पिछले वर्ष 04 मई 2025 को बद्रीनाथ यात्रा का श्रीगणेश हुआ था। तब 21 अगस्त यानी 110 दिन में यह आंकड़ा 12 लाख 61 हजार 280 था।

पुष्कर सिंह धामी मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड ने कहा की चारधाम यात्रियों की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। मानसून की सक्रियता को देखते हुए आपदा प्रबंधन विभाग को चौबीसों घंटे अलर्ट मोड पर रखा गया है।

जिलाधिकारियों को सतर्क रहने को कहा गया है, ताकि किसी भी आपात स्थिति में राहत और बचाव कार्य तत्काल शुरू हो सके। भूस्खलन या अन्य किसी भी प्रकार की आपदा की स्थिति में श्रद्धालुओं को सुरक्षित स्थानों पर ठहराने के निर्देश दिए गए हैं। श्रद्धालुओं को मौसम के मिजाज को देखकर ही यात्रा करने की सलाह दी जा रही है।

## मुख्यमंत्री ने संगठनों की समस्याओं एवं मांगों के परीक्षण कर उचित समाधान के दिए निर्देश

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मंगलवार को मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय स्थित मुख्य सेवक सदन में विभिन्न कर्मचारी संगठनों के प्रतिनिधिमंडलों ने भेंट की। प्रतिनिधिमंडलों ने अपने-अपने विभागों एवं संवर्गों से संबंधित विभिन्न समस्याओं एवं मांगों से मुख्यमंत्री को अवगत कराया। मुख्यमंत्री ने सभी प्रतिनिधिमंडलों की समस्याओं एवं मांगों को गंभीरता से सुनते हुए शासन के वरिष्ठ अधिकारियों को नियमानुसार परीक्षण कर यथोचित कार्यवाही एवं समस्याओं के उचित समाधान के निर्देश दिए। शिक्षा अधिकारी प्रशासनिक संवर्ग एसोसिएशन, उत्तराखंड के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों ने श्री गोविंद राम जायसवाल के नेतृत्व में मुख्यमंत्री से भेंट की।प्रतिनिधिमंडल ने निदेशक, अपर निदेशक, संयुक्त निदेशक एवं खंड शिक्षा अधिकारियों के रिक्त पदों पर विभागीय पदोन्नति किए जाने तथा कार्मिकों की परिवीक्षा अवधि पूर्ण होने के उपरांत स्वत: स्थायीकरण की व्यवस्था सहित विभिन्न समस्याओं के समाधान का अनुरोध किया। उत्तराखंड डिप्लोमा इंजीनियर्स संघ, जल संस्थान के प्रतिनिधि मंडल ने उत्तराखंड जल संस्थान के राजकीयकरण की मांग मुख्यमंत्री के समक्ष रखी। वहीं, उत्तराखंड विश्वविद्यालय कर्मचारी महासंघ के प्रतिनिधिमंडल ने राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों में गैर-शैक्षणिक कार्मिकों के रिक्त पदों को भरे जाने, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय में गैर-शिक्षण कार्मिकों के पदों के पुनर्गठन तथा गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में कार्यरत प्रयोगशाला सहायकों को राज्य के अन्य विश्वविद्यालयों में कार्यरत प्रयोगशाला सहायकों के समान वेतनमान प्रदान किए जाने का अनुरोध किया। उत्तराखंड जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ के प्रतिनिधिमंडल ने 25 अक्टूबर 2005 से पूर्व विज्ञापित पदों पर नियुक्त शिक्षकों को पुरानी पेंशन योजना में सम्मिलित किए जाने तथा वर्ष 2010 से पूर्व नियुक्त शिक्षकों को टीईटी परीक्षा में शिथिलता प्रदान किए जाने का अनुरोध किया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन कर्मचारी संगठन, उत्तराखंड, उत्तराखंड एएनएम संवर्ग संगठन, लैब टेक्निशियन संगठन, राज्य निगम कर्मचारी अधिकारी महासंघ उत्तराखंड, माध्यमिक अतिथि शिक्षक संघ उत्तराखंड, अंशकालिक शिक्षक संघ तथा उत्तराखंड राज्य आबकारी निरीक्षक संघ के प्रतिनिधि मंडलों ने भी मुख्यमंत्री से भेंट कर अपने-अपने संवर्गों से संबंधित विभिन्न मांगों एवं समस्याओं से अवगत कराया। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रमुख सचिव श्री आर.के. सुधांशु को निर्देश दिए कि विभिन्न संगठनों द्वारा रखी गई मांगों एवं समस्याओं का संबंधित विभागों के माध्यम से नियमानुसार परीक्षण कराते हुए उचित समाधान की दिशा में आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित की जाए।

## 'मुख्यमंत्री ने प्रदान की विभिन्न विकास योजनाओं के लिए 74 करोड़ की वित्तीय स्वीकृति'

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में अवस्थाना सुविधाओं के विकास, प्रारम्भिक व माध्यमिक विद्यालयों की आपदा के कारण क्षतिग्रस्त सम्पत्तियों की मरम्मत, शासकीय आवासीय भवनों के निर्माण, विभिन्न गांवों तथा कार्यालयों के बाढ़ सुरक्षा उपायों, क्षतिग्रस्त मार्गों के पुर्ननिर्माण, आपदा से बचाव व हेलीपैड निर्माण आदि कार्यों के लिए 74 करोड़ की धनराशि का अनुमोदन प्रदान किया गया है। मुख्यमंत्री द्वारा जनपद बागेश्वर के बेडा-मझड़ा (करीमपुर) हैलीपैड निर्माण किये जाने हेतु 8.91 करोड, गंगोत्री धाम में सीवर लाईन एवं छुटे हुए घरों/सार्वजनिक शौचालयों से सम्बंधित कार्यों हेतु 4.99 करोड की योजना स्वीकृत किये जाने के साथ ही अभियोजन कार्यालय में अभियोजन अधिष्ठान के अन्तर्गत अवशेष धनराशि ₹ 8.89 करोड़ की धनराशि स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया है। मुख्यमंत्री द्वारा आपदा के मध्येनजर विद्यालयों परिसरों में विद्यार्थियों एवं कार्मिकों की सुरक्षा के दृष्टिगत क्षतिग्रस्त आधारभूत सुविधाओं की त्वरित मरम्मत एवं शिक्षण कार्यों की निरन्तरता बनाये रखने के लिए माध्यमिक शिक्षा के अन्तर्गत संचालित विद्यालयों हेतु 15.00 करोड एवं प्रारम्भिक शिक्षा के अन्तर्गत संचालित विद्यालयों हेतु 15.00 करोड़ कुल धनराशि 30.00 करोड़ राज्य आपदा मोचन निधि के पुर्नप्राप्ति एवं पुर्ननिर्माण हेतु स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया है। इसके साथ ही उत्तरकाशी, बागेश्वर, अल्मोडा, चमोली, चम्पावत, रूद्रप्रयाग, पिथौरागढ़ एवं देहरादून जनपदों को राज्य आपदा मोचन निधि के विभिन्न मदों यथा राहत एवं बचाव, पुर्नप्राप्ति एवं पुर्ननिर्माण तथा तैयारी एवं क्षमता निर्माण हेतु ₹ 1.08 करोड की धनराशि स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया है। मुख्यमंत्री द्वारा जनपद उधमसिंहनगर के विकासखण्ड खटीमा के 07 ग्रामों में आवासीय भवनों की नदी/नालों की बाढ़ से सुरक्षा हेतु 4.01 करोड़ तथा भारत-नेपाल सीमा पर जगबूढा नदी के दांये पार्श्व पर स्थित ग्राम-सिसैया, मेलाघाट एवं एस.एस.बी. कैंप कार्यालय की बाढ़ सुरक्षा हेतु 4.62 करोड की योजना स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया है। मुख्यमंत्री द्वारा जनपद चमोली में वित्तीय वर्ष 2024-25 एवं 2021 से पूर्व ओपन कम्यूनिकेशन के तहत आपदा क्षतिग्रस्त मार्गों को खोले जाने तथा मार्गों से मलबा हटाये जाने हेतु उपयोग में लाई गई जे. सी.बी./पॉकलैण्ड के बीजकों का भुगतान 3.18 करोड की धनराशि राज्य आपदा मोचन निधि के राहत एवं बचाव मद से स्वीकृत किये का अनुमोदन प्रदान किया गया है। मुख्यमंत्री द्वारा नगर पालिका परिषद हरबर्टपुर क्षेत्रान्तर्गत ठोस अपशिष्ट परियोजना हेतु ₹ 3.27 करोड का अनुमोदन प्रदान किया गया है। मुख्यमंत्री द्वारा भूकम्प पूर्व चेतावनी प्रणाली यंत्रों के रख-रखाव हेतु 2.00 करोड, सैटेलाइट फोनों के रिचार्ज हेतु 1.90 करोड़, विश्व बैंक सहायतित परियोजना के सहयोग से जनपदों में स्थापित उपकरणों के रख-रखाव एवं मानदेय तथा जोशीमठ भूस्खलन कन्ट्रोल रूम में तैनात विशेषज्ञों के मानदेय हेतु 40 लाख, विभिन्न मॉक अभ्यासों के आयोजन हेतु 60 लाख तथा प्राधिकरण में तैनात ई.ई.आर.एस. कार्मिकों के मानदेय हेतु ₹ 18 लाख की धनराशि राज्य आपदा मोचन निधि के क्षमता विकास से अवमुक्त किये का अनुमोदन प्रदान किया गया है।

स्वामी एवं प्रकाशक मौ. वसी के लिये मुद्रक नुसरत निशान खान द्वारा कौमी गुलदस्ता प्रिंटर्स, विलेज आमवाला, पोस्ट घंघौरा, देहरादून द्वारा, उत्तराखण्ड-248141 से मुद्रित एवं 5, लेन नम्बर 2, नामदेव एन्क्लेव फेस 2, ब्राहम्णवाला, देहरादून उत्तराखण्ड- 248171 से प्रकाशित। सम्पादक-मौ. वसी,
समस्त विवाद के लिये न्याय क्षेत्र देहरादून मान्य होगा। सम्पर्क- 9411112331